IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार व उसके विविध कारक : एक अध्ययन

संजय पाण्डेय (शोधार्थी)
डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध
विश्वविद्यालय अयोध्या उ. प्र.

प्रो. मोहम्मद शाहिद (शोध पर्यवेक्षक)
गनपत सहाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सुल्तानपुर उ. प्र.

सारांश

लोकतंत्र को श्रेष्ठतम शासन व्यवस्था के रूप में स्वीकार किया जाता है। इस शासन व्यवस्था में राजनीतिक सत्ता जनता में निवास करती है। जनता शासन में प्रत्यक्ष रूप से भाग न लेकर अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से भाग लेती है। इसे प्रतिनिधि मूलक अथवा अप्रत्यक्ष लोकतंत्र कहा जाता है। स्वातंत्र्योत्तर भारत में संविधान निर्माताओं ने भारत के लिए इसी प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्रात्मक शासन को स्वीकार किया। इसमें जनता निश्चित अवधि के लिए मताधिकार के माध्यम से अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है। यही जनप्रतिनिधि शासन-शक्ति के धारक व प्रयोगकर्ता बन जाते हैं। मतदान की प्रक्रिया मतदाता के व्यवहार के व्यापक आयाम का एक पक्ष है। चुनाव में मतदान अनेक तथ्यों से प्रभावित होता है तथा मतदाता की अपनी अवधारणा के आधार पर ही उसका व्यवहार अभिव्यक्त होता है। विभिन्न मुद्दों व कार्यक्रमों से प्रभावित होकर वह किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष अथवा विपक्ष में मतदान करता है। मतदाता अपने मत के माध्यम से जो भावना व्यक्त करता है वह राजनीतिक व्यवहार ही मतदान व्यवहार कहा जाता है। इस प्रकार मतदान व्यवहार का तात्पर्य उन कारकों से है जो मतदाताओं को किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष अथवा विपक्ष में मतदान करने के लिए प्रभावित करते हैं। मतदान व्यवहार के इन कारकों में जाति,धर्म, राजनीतिक दल, नेतृत्व,क्षेत्रवाद, आयु-लिंग, आर्थिक परिस्थिति व तात्कालिक परिवेश प्रमुख हैं। भारत में

लोकसभा व विभिन्न प्रदेशों के विधानसभा चुनावों में इन कारकों ने मतदान व्यवहार को प्रभावित किया है। परंतु किसी चुनाव में मतदान व्यवहार के कौन से कारक कितना प्रभाव डालते हैं इस विषय में स्पष्ट रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं है। ये कारक अलग-अलग राजनीतिक व्यवस्थाओं व निर्वाचन क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न हो सकते हैं।

मुख्य शब्दः

राजनीतिक व्यवस्था, चुनाव, राजनीतिक दल, मतदान व्यवहार, प्रतिनिधि मूलक लोकतंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार वह उसके विविध कारकों पर केंद्रित है। लोकतंत्र का मुख्य आधार शांतिपूर्ण सत्ता परिवर्तन है और इसका सर्वाधिक उपयुक्त साधन समयबद्ध, स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव है। चुनाव में मतदान को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारक होते हैं। मतदान व्यवहार के ये कारक चुनावों को विभिन्न रूपों में प्रभावित करते हैं। मतदान व्यवहार के इन विभिन्न कारकों का वर्गीकरण, अध्ययन और विश्लेषण इस शोध पत्र में किया गया है। भारतीय चुनावों में मतदाताओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से हैं ? मतदाताओं के मतदान व्यवहार को सही दिशा कैसे प्रदान की जा सकती है ? इन प्रश्नों के उत्तर तलाशने का कार्य प्रस्तुत शोध पत्र में किया गया है।

साहित्यावलोकनः

भारतीय लोकतंत्र में मतदान व्यवहार व उसके विविध कारक शोध पत्र को पूर्ण करने में इस विषय पर पूर्व में लिखे गए साहित्य का अवलोकन किया गया है। इन शोध साहित्यों का विवरण निम्नवत है :

एन.जी.एस. किनी ने अपनी पुस्तक 'द सिटी वोटर इन इंडिया' (1974) में स्पष्ट किया है कि समुदाय एकमत से निर्णय करता है कि किस दल या व्यक्ति को वोट किया जाए।

शेल.सी.नाना ने अपनी पुस्तक 'स्पेशल फ्रेगमेंटेशन ऑफ पोलिटिकल बिहेवियर इन इंडिया' (1989) में निष्कर्ष निकाला कि राजनीतिक दलों का चरित्र मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है।

धर्म चंद जैन ने अपनी पुस्तक 'भारतीय लोकतंत्र' (2000) में लिखा कि लोकतंत्र की सार्थकता स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव व्यवस्था पर निर्भर करती है। इसके साथ ही राजनीतिक दलों की सहभागिता और मतदान व्यवहार का विश्लेषण भी प्रस्तुत किया गया है।

एच.आर. मुखी ने अपनी पुस्तक 'पॉलिटिकल साइंस' (2003) में यह स्पष्ट किया कि मतदान व्यवहार जाति धर्म व अन्य कारकों से प्रभावित होता है।

मनोज शर्मा ने अपनी पुस्तक 'इंडियन गवर्नमेंट एंड पॉलिटिक्स' (2004) में विचार दिया कि जाति, धर्म, क्षेत्रवाद, विचारधारा व समुदाय वे महत्वपूर्ण कारक हैं जो मतदाताओं के मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं।

संजय कुमार ने अपनी संपादित पुस्तक 'इंडियन पालिटी कांस्टीट्यूशन एंड पार्लियामेंट (2006) मैं निष्कर्ष निकाला कि मतदान व्यवहार में राजनीतिक कारक जैसे विचारधारा, पारिवारिक व दलीय संबंध महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चुन्नीलाल लालूभाई पारेख ने अपनी पुस्तक 'एमिनेंट इंडियंस ऑन इंडियन पॉलिटिक्स'(2017) में भारतीयों की अपने अधिकारों एवं राजनीति के प्रति बढ़ रही जागरूकता का विवेचन किया है।

रजनी कोठारी ने अपनी पुस्तक 'भारत में राजनीति कल और आज' (2020) में जाति और लोकतांत्रिक राजनीति की अन्योन्यक्रिया को जातियों का राजनीतिकरण कहा।

उपर्युक्त अध्ययन द्वारा शोध विषय से संबंधित उपलब्ध साहित्य की समीक्षा कर शोध पत्र को पूर्ण किया गया है। तथ्यों का संकलन अनेक स्रोतों से किया गया है। इनमें विभिन्न पुस्तकें व पत्र-पत्रिकाएं सम्मिलित है। प्राप्त तथ्यों का विश्लेषणात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त करने का प्रयास किया गया है।

मतदान व्यवहार:

लोकतंत्र को राजनीतिक व सामाजिक संगठन का श्रेष्ठतम प्रकार माना जाता है। शासन का तो यह सर्वोत्कृष्ट रूप बन गया है। लोकतंत्र में राजनीतिक व शासन व्यवस्था से संबंधित सत्ता जनता में निवास करती है। यहाँ जनता प्रत्यक्ष रूप से स्वयं शासन में भाग न लेकर अपने प्रतिनिधियों को चुनकर अपनी तरफ से उन्हें शासन का अधिकार प्रदान करती है। यही जनप्रतिनिधि शासन शक्ति के धारक व प्रयोगकर्ता बन जाते हैं। इस कारण प्रतिनिधियों की भूमिका संपूर्ण शासन व्यवस्था की नियामक बन जाती है। अतः आज का लोकतंत्र प्रत्यक्ष लोकतंत्र न होकर अप्रत्यक्ष लोकतंत्र या प्रतिनिधिमूलक लोकतंत्र है। निश्चित अवधि के लिए जनता अपने मताधिकार का प्रयोग करके अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करती है जिनके माध्यम से शासन तंत्र को संगठित किया जाता है।

लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का मुख्य आधार शांतिपूर्ण सत्ता परिवर्तन है और इसका सर्वाधिक उपयुक्त साधन समयबद्ध,स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव है। अतः आज लोकतंत्र अब्राहम लिंकन की परिभाषा जनता का, जनता के द्वारा, और जनता के लिए शासन से आगे बढ़कर चुनाव का,चुनाव के द्वारा और चुनाव के लिए स्थापित शासन हो गया है। चुनाव के द्वारा अपने प्रतिनिधियों के माध्यम से जनता द्वारा जनता के शासन का निर्माण होता है। चुनाव में लोगों को मत (वोट) देने का अधिकार प्राप्त होता है, जिसके माध्यम से वे अपने लिए उपयुक्त प्रतिनिधि का चुनाव कर शासन में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करते हैं। मताधिकार का प्रयोग राजनीतिक सहभागिता का सबसे प्रचलित व सुस्पष्ट तरीका है। मतदान की प्रक्रिया मतदाता के व्यवहार के व्यापक आयाम का एक पक्ष है। मतदाता व्यवहार पर ही लोकतंत्र का स्वरूप व भविष्य अवलंबित है। वस्तुतः मतदाता व्यवहार स्वयं में चुनाव व लोकतंत्र की आधारशिला है। चुनाव के समय मतदान अनेकानेक बातों से प्रभावित होता है तथा मतदाता की अपनी अवधारणा के आधार पर ही उसका व्यवहार होता है। विभिन्न मुद्दों व कार्यक्रमों से प्रभावित होकर वह किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष या विपक्ष में मतदान करता है। इस प्रकार वह अपने सामाजिक व राजनीतिक योगदान को सुनिश्चित करता है। इस प्रक्रिया में चुनाव के द्वारा जन सामान्य की सत्ता में सीधी भागीदारी सुनिश्चित होती है। लोकतंत्र में जनता अर्थात मतदाता अपने मत या वोट के माध्यम से जो इच्छा प्रकट करता है वह राजनीतिक व्यवहार ही साधारण अर्थों में मतदान व्यवहार कहा जाता है।

लोकतंत्र को गतिशील व सशक्त बनाने में समयबद्ध चुनाव और इसमें मतदाताओं की सहभागिता अनिवार्य है। चुनाव में जनता अपने मत के माध्यम से इस सहभागिता को सुनिश्चित करती है। जनता का यही राजनीतिक व्यवहार मतदान व्यवहार कहलाता है। मतदान व्यवहार जनता के राजनीतिक व्यवहार का एक अनिवार्य पहलू है। मतदान व्यवहार का अर्थ है कि मतदाता किन भावनाओं से प्रेरित होकर अपने मताधिकार का प्रयोग करता है। संक्षेप में मतदान व्यवहार का तात्पर्य एक मतदाता के उस चुनाव व्यवहार से है जिसका प्रदर्शन वह चुनाव अभियान एवं मतदान में करता है। मतदान के समय किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह का मनोभाव जो उसके मतदान के माध्यम से अभिव्यक्त होता है मतदान व्यवहार कहलाता है। दूसरे शब्दों में ऐसा कारक जो किसी मतदाता के मतदान के समय के व्यवहार को तय करता हो मतदान व्यवहार कहा जाता है। इस प्रकार मतदान व्यवहार का तात्पर्य उन कारकों के अध्ययन से है जो जनमानस की मत शक्ति को प्रभावित करते हैं। मतदाता अपने मताधिकार के माध्यम से किसी भी राजनीतिक व्यवस्था को स्थापित या विस्थापित करते हैं।प्लानो तथा रिग्स के अनुसार 'सार्वजनिक चुनाव में लोग किस प्रकार वोट देते हैं इससे संबंधित अध्ययन ही मतदान

व्यवहार है और इसमें वह कारण भी सम्मिलित है कि लोग मतदान उसी प्रकार क्यों करते हैं।' डोनाल्ड ई स्टोक्स के अनुसार मतदान व्यवहार से अभिप्राय मतदाता के मत देने तथा इसे प्रभावित करने वाले कारकों के अध्ययन से है।

मतदान व्यवहार के विविध कारक:

राजनीतिक व्यवस्था में चुनावों की भूमिका को मतदाताओं के मतदान व्यवहार के आधार पर समझना संभव है। मतदान व्यवहार के अध्ययन का केंद्र बिंदु यह जानना होता है कि मतदाता मतदान के समय किस तथ्य से सर्वाधिक प्रभावित रहता है। वह कौन से मुद्दे हैं जो आम मतदाता को अपना मत किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी को देने के लिए प्रेरित करते हैं। विकसित देशों में मतदान व्यवहार के राजनीतिक तथा विकासशील देशों में सामाजिक आर्थिक कारकों पर अधिक बल दिया जाता है। आधुनिक अध्ययन व शोधों में इन दोनों कारकों पर ध्यान देने की प्रवृत्ति दिखाई देती है ताकि उनके सापेक्षिक प्रभावों को परखा जा सके। भारत जैसे विकासशील समाज में मतदान व्यवहार का अध्ययन जितना राजनीतिक दृष्टिकोण से होना चाहिए उतना ही सामाजिक आर्थिक दृष्टिकोण से भी। भारतीय मतदाताओं का मतदान व्यवहार समय-समय पर बदलता रहता है। कभी वह जाति से प्रभावित होता है तो कभी धर्म उसके निर्णय को प्रभावित करता है। मतदाताओं के ऊपर क्षेत्रवाद के साथ-साथ राष्ट्रीयता, राजनीतिक दल, व्यक्तित्व व धन का प्रभाव भी पड़ता है। इनके अतिरिक्त कभी-कभी राष्ट्रीय व स्थानीय समकालीन मुद्दे भी मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। भारत में लोकसभा व उत्तर प्रदेश सहित विभिन्न प्रदेशों के विधानसभा व अन्य स्थानीय चुनावों में भी ये सभी कारक अपनी भूमिका का निर्वहन करते रहे हैं। परंतु किसी चुनाव में मतदान व्यवहार के कौन से कारक कितना प्रभाव डालते हैं इस विषय में स्पष्ट रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं है। इस प्रकार मतदान व्यवहार विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है। ये कारक अलग-अलग निर्वाचन क्षेत्रों व राजनीतिक व्यवस्थाओं में अलग अलग हो सकते हैं। भारत में लोकसभा व विभिन्न विधानसभाओं के चुनावों में विभिन्न कारक अपनी भूमिका

का निर्वहन करते हैं। मतदान व्यवहार के इन विभिन्न कारकों का अध्ययन इस वर्गीकरण के माध्यम से किया जा सकता है:

1.जाति:

जाति भारतीय समाज का यथार्थ व सामाजिक संरचना का महत्वपूर्ण आधार है। भारतीय समाज जाति व्यवस्था के आधार पर अनेक वर्गों में विभाजित है। जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज के सभी पक्षों को प्रभावित किया है जिसमें उसका राजनीतिक पक्ष भी सम्मिलित है। इसी कारण जाति मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक है। घनश्याम शाह के अनुसार 'जापान में मतदान व्यवहार समूह निर्धारित है ब्रिटेन में वर्ग निर्धारित है अमेरिका में प्रजाति निर्धारित है तथा भारत में जाति निर्धारित है।'

भारत में राजनीतिक दलों ने जाति को वोट बैंक के रूप में प्रयोग करके उसका उपयोग अपने हितों के लिए किया है। जातियां संगठित होकर राजनीति में भाग लेती हैं और जातिगत भारतीय समाज में जातियां ही राजनीतिक शक्तियां बन गई है। भारत में राजनीति जाति के इर्द-गिर्द घूमती है। राजनीति जातीय समुदायों को संगठित करके उनके समर्थन से सत्ता तक पहुंचने का प्रयास करती है। राजनीति व जाति का यह अंतर्संबंध भारत व विभिन्न राज्यों के संबंध में पूर्णत: है सत्य है। उत्तर प्रदेश के विभिन्न विधानसभा चुनावों में भी जाति ने महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया है।

भारत में जाति राजनीति और चुनाव का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्धारक तत्व है। यहां राजनीति का संचालन जातीय मुहावरों के बिना नहीं हो सकता। भारत में जाति मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला प्रमुख तत्व है। राजनीतिक दल निर्वाचन क्षेत्र की जातीय संरचना के आधार पर प्रत्याशियों का चयन करते हैं। विभिन्न मतदाता समूह मतदान व्यवहार के निर्वहन में अपनी जाति या उपजाति के समीकरण को दृष्टि में रखते हैं। राजनीतिक दल भी अपने प्रत्याशी चयन में जाति को ध्यान में रखते हैं। भारत में विभिन्न राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने के लिए जातीय समूहों को संगठित करते हैं। इस प्रकार राजनीति जाति का सहारा लेती है। दूसरी ओर जाति अपने हितों की रक्षा के लिए राजनीति का प्रयोग करती है। इस प्रकार जाति व राजनीति परस्पर संबंधित व एक दूसरे के पूरक हैं। परंतु यह कहना उचित नहीं है कि भारतीय मतदाता प्रत्येक परिस्थिति में जातिवाद से प्रभावित होता है। यदि चुनाव के समय कोई महत्वपूर्ण प्रश्न या समस्या सामने हो तो मतदान व्यवहार का जाति कारक गौड़ हो जाता है। परंतु सामान्य परिस्थितियों में जाति मतदान व्यवहार को निर्णायक रूप से प्रभावित करता है।

2.धर्म:

भारत सामाजिक सांस्कृतिक दृष्टि से धर्मप्राण परंतु संवैधानिक दृष्टि से धर्मनिरपेक्ष राज्य है। इस धर्मनिरपेक्ष राज्य का अपना कोई राजकीय धर्म नहीं है तथा वह सभी धर्मों से समान व्यवहार करता है। भारत का संविधान धर्म के आधार पर भेदभाव का निषेध करता है। धर्म के साथ राजनीति के संबंध का निर्धारण धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत से होता है। इसके बावजूद कुछ विचारक भारत को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं मानते क्योंकि उनके अनुसार यहां धर्म और राजनीति के बीच पूर्ण पृथक्करण संभव ही नहीं है। राजनीति व धर्म के बीच यह घनिष्ठता चुनाव के दौरान प्राय:

दिखाई पड़ती है। भारत में कोई भी चुनाव धर्म और संप्रदाय के समीकरण के बिना पूर्ण नहीं होता है। सभी राजनीतिक दल प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चुनाव में धर्म या संप्रदाय का उपयोग करते हैं। चुनाव में धर्म व संप्रदाय के प्रभाव का कारण यह है कि विभिन्न राजनीतिक दल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जनता की धार्मिक व सांप्रदायिक भावनाओं का उपयोग करते हैं। भारत में अधिकांश राजनीतिक दल और उसके नेता चुनाव में धर्म व संप्रदाय की दलीलों के आधार पर वोट मांगते हैं। मतदान के अवसर पर वोट मांगने वाले और मतदान करने वालों के आचरण पर धार्मिक तत्वों छाए रहते हैं। इन परिस्थितियों में किसी भी चुनाव में धर्म या संप्रदाय मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक सिद्ध होता है।

प्रत्येक राजनीतिक दल चुनाव में धर्म के आधार पर मतों को प्राप्त करने का प्रयास प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से करते हैं और मतदाता इस आधार पर मतदान भी करते रहे हैं। इस प्रकार चुनाव में धर्म का सहारा लेने वाले दलों का राजनीतिक प्रक्रिया पर व्यापक प्रभाव होता है। मतदाता भी धर्म से प्रभावित होकर मतदान करते हैं। राजनीतिक दल धर्म और संप्रदाय की दलीलों के आधार पर मतदान की अपील करते हैं। धर्मनिरपेक्ष राज्य में राजनीति और चुनाव धर्म से अलग होने चाहिए। परंतु सच्चाई तो यह है कि धर्म का चुनाव में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यापक उपयोग किया जाता है। राजनीतिक दल चुनाव में धर्म व संप्रदाय का उपयोग करते हैं और मतदाता भी धर्म और संप्रदाय से प्रभावित होकर मतदान करते हैं। इस प्रकार उत्तर प्रदेश समेत सारे देश के चुनाव का मतदान व्यवहार धर्म व संप्रदाय से प्रभावित होता है। अतः धर्म व संप्रदाय मतदान व्यवहार का एक प्रमुख कारक है।

3.राजनीतिक दल:

मतदान व्यवहार का एक कारक राजनीतिक दल व राजनीतिक स्थायित्व भी है। भारत में मतदाताओं का एक वर्ग अपनी दलीय पहचान रखता है। वह चुनाव में उसी दल विशेष को प्रतिबद्धता के साथ मतदान करता है। राजनीतिक दलों की विचारधारा, नीतियां व कार्यक्रम मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। ये विचारधाराएं, नीतियां और कार्यक्रम राजनीतिक दल विशेष के लिए प्रतिबद्ध मतदाताओं के एक समूह का निर्माण करती हैं जो अपनी दलीय प्रतिबद्धता के कारण उसी दल को मतदान करते हैं। परंतु राजनीतिक दलों के प्रति मतदाता तर्कसंगत दृष्टि भी रखते हैं। ऐसे में राजनीतिक दल चुनाव में मतदाता के स्थायी समर्थन के प्रति आश्वस्त नहीं हो सकता है। परिणाम स्वरूप विभिन्न चुनाव में मतदान व्यवहार विभिन्न राजनीतिक दलों के पक्ष में निरंतर परिवर्तनशील होता रहता है।

इकबाल नारायण का मत है कि भारत में प्रबुद्ध वर्ग के मतदाता विचारधारा,कार्यक्रम व नीतियों से अधिक प्रभावित होते हैं और आम भारतीय मतदाता इनसे कम प्रभावित होते है। विभिन्न चुनावों में राजनीतिक दलों के घोषणापत्र उनकी नीतियां व कार्यक्रम प्रायः जनसाधारण की समझने की वस्तु न होकर जागरूक व प्रबुद्ध वर्ग के समझने की वस्तु होते हैं। फलस्वरुप राजनीतिक दलों की विचारधारा,कार्यक्रम व नीतियां प्रबुद्ध वर्ग के मतदान व्यवहार को प्रभावित करती हैं। जनसाधारण के मतदान व्यवहार पर इनका विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

राजनीतिक स्थायित्व जैसे कारक भी चुनाव में मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। भारतीय मतदाता सामान्यतः सुदृढ व स्थायी सरकार चाहते हैं। भारतीय मतदाताओं ने अनेक अवसरों पर अपने मतदान व्यवहार से यह स्पष्ट कर दिया है कि वे केंद्र व राज्यों में ऐसी सरकार चाहते हैं जो सक्षम हो तथा देश को स्थायित्व प्रदान कर सके। उत्तर प्रदेश में 2007 से अब तक हुए प्रत्येक विधानसभा चुनाव में मतदाताओं ने अपने मतदान व्यवहार से अलग-अलग राजनीतिक दलों को स्थायी सरकार हेतु मतदान किया है। इस प्रकार राजनीतिक दल व राजनीति का स्थायित्व मतदान व्यवहार का एक महत्वपूर्ण कारक है।

4.नेतृत्व:

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाला एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक नेतृत्व व व्यक्तित्व भी है। कभी-कभी मतदाता मतदान व्यवहार हेतु किसी भी अन्य कारक की अपेक्षा नेतृत्व व व्यक्तित्व को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। मतदान व्यवहार का यह कारक मुख्य रूप से अध्यक्षीय शासन व्यवस्था से जुड़ा है। ऐसी शासन व्यवस्थाओं में नेतृत्व व व्यक्तित्व के मुद्दे पर ही प्रायः चुनाव होते हैं। परंतु संसदीय शासन व्यवस्था में भी इसका महत्व कम नहीं है। राजनीतिक व्यवस्था में सक्रिय राजनेता मतदाताओं में अपनी ऐसी छवि बना लेते हैं कि लोग उस नेता के व्यक्तित्व व नेतृत्व से प्रभावित होकर मतदान करते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में आइजनहावर ब्रिटेन में मार्गरेट थैचर भारत में पंडित जवाहरलाल नेहरू, इंदिरा गांधी का व्यक्तित्व व नेतृत्व ऐसा ही कारक रहा है। हाल के वर्षों में अटल बिहारी बाजपेयी व नरेंद्र मोदी भी ऐसे ही कारक सिद्ध हुए हैं। भारत में प्रादेशिक स्तर पर भी ऐसे अनेक व्यक्तित्व व नेतृत्व हुए हैं जिन्होंने मतदान व्यवहार को प्रभावित किया है। इनमे मुलायम सिंह यादव,एन. टी रामाराव, नवीन पटनायक,ममता बनर्जी, एम. करुणानिधि और जे.जयललिता इत्यादि मुख्य हैं। कभी-कभी मतदान व्यवहार का नेतृत्व व व्यक्तित्व कारक अपनी भूमिका सकारात्मक के साथ-साथ नकारात्मक रूप में भी प्रदर्शित करता है। इसके परिणामस्वरूप चुनावों में संबंधित राजनीतिक दलों को अपने नेतृत्व व व्यक्तित्व के कारण पराजय का भी सामना करना पड़ता है।

5.क्षेत्रवाद:

क्षेत्रवाद क्षेत्रीय व स्थानीय हितों की अभिवृद्धि के प्रति आग्रह है। क्षेत्रवाद वह मनोभाव और आचरण व्यवहार है जिसमें व्यक्ति अन्य क्षेत्रों व उसमें रहने वाले व्यक्तियों की तुलना में अपने क्षेत्र व उसमें रहने वाले व्यक्तियों को प्राथमिकता देता है। क्षेत्रवाद राष्ट्रीय हितों की तुलना में क्षेत्रीय हितों को अधिक महत्व प्रदान करता है। इस प्रकार क्षेत्रवाद एक संकीर्ण अवधारणा है। राजनीति में क्षेत्रवाद के वाहक प्रायः क्षेत्रीय दल होते हैं। भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों के विकास के दौर में क्षेत्रवाद का तीव्र गति से विकास हुआ। उत्तर प्रदेश समेत अनेक राज्यों में क्षेत्रीय दलों की सफलता का कारण क्षेत्रवाद की भावना है। क्षेत्रवाद की बढ़ रही प्रवृत्ति के कारण संबंधित मतदाता क्षेत्रवाद के नाम पर मतदान करते हैं। ऐसे में मतदान व्यवहार क्षेत्रवाद से प्रभावित होने लगा है। भारत में लोकसभा चुनाव को मतदान व्यवहार के क्षेत्रीय कारक प्रभावित करते हैं। इसका लाभ प्रायः क्षेत्रीय दलों को होता है और वे राष्ट्रीय राजनीति में व्यापक सफलता प्राप्त करते हैं। परंतु यदि क्षेत्रीय दल व उनकी सरकारें अपने-अपने राज्यों में अच्छा

शासन नहीं दे पाती तो इसका नुकसान भी उन्हें ही उठाना पड़ता है। वे राष्ट्रीय राजनीति में कमजोर स्थिति में आ जाते हैं। इससे क्षेत्रवाद की भावना कमजोर होती है और राज्यों के चुनाव भी राष्ट्रीय मुद्दों के आसपास केंद्रित हो जाते हैं। इस प्रकार मतदान व्यवहार का क्षेत्रवाद कारक राजनीतिक दलों के लिए सकारात्मक और नकारात्मक दोनों रूप से प्रभावित करता है। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव 2012 में क्षेत्रवाद का प्रभाव सकारात्मक तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव 2017 में नकारात्मक प्रभाव पड़ा।

6.आयु-लिंग:

मतदान व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों में आयु-लिंग का भी महत्वपूर्ण स्थान है। चुनाव में विभिन्न आयु वर्ग व लिंग आधारित मुद्दे मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं। युवा, बुजुर्ग व स्त्रियां अपने अपने व्यक्तिगत मुद्दों के आधार पर अपनी-अपनी मतदान प्राथमिकताएं निर्धारित करते हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए राजनीतिक दल युवाओं, बुजुर्गों और महिलाओं के लिए नीतियां प्रस्तुत करते हैं। युवाओं के लिए शिक्षा व रोजगार के मुद्दे, महिलाओं के लिए महिला सुरक्षा व संरक्षा के मुद्दे, तथा वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण से संबंधित अनेक आश्वासन विभिन्न राजनीतिक दलों की घोषणापत्र में सम्मिलित किए जाते हैं। इन मुद्दों को घोषणा पत्र में सम्मिलित किए जाने से संबंधित पक्ष मतदान में उत्साह से भाग लेते हैं। इसी को ध्यान में रखकर विभिन्न राजनीतिक दल अनेक युवा केंद्रित नीतियों जैसे शिक्षा व रोजगार आदि की चर्चा करते हैं, जिसका मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। वरिष्ठ नागरिकों के कल्याण से संबंधित नीतियां यदि राजनीतिक दलों के घोषणा पत्रों में सम्मिलित होती हैं तो इनका भी मतदान व्यवहार पर प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार आयु व लिंग कारक मतदान व्यवहार पर प्रभाव डालता है। लोकसभा और विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में सदैव इस कारक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

7.आर्थिक परिस्थिति:

भारत के चुनावी लोकतंत्र में मतदान व्यवहार के आर्थिक परिस्थिति कारक की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारतीय समाज आर्थिक दृष्टिकोण से एक विषमताग्रस्त समाज है। कमजोर आर्थिक स्थिति वाले मतदाताओं को चुनाव में प्रत्याशियों व राजनीतिक दलों द्वारा धन के बल पर आकर्षित करने का प्रयास किया जाता है। चुनावों में धन का प्रलोभन देकर मतों को खरीदने का प्रयास भी किया जाता है और गरीब मतदाता इस लालच में आ भी जाते हैं। मतदान की पूर्व संध्या पर प्रत्याशियों की तरफ से पैसे बांटे जाते हैं। कोई भी चुनाव उनके लिए अधिक लाभप्रद होता है जिनके पास धन खर्च करने का सामर्थ्य अधिक होता है। ऐसे राजनीतिक दलों और प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान व्यवहार प्रभावित हो जाता है। परंतु जब राजनीतिक दलों व प्रत्याशियों के विरुद्ध व्यापक जनमानस हो जाता है तो धनशक्ति अपना सीमित प्रभाव ही डाल पाती है। तथापि मतदान व्यवहार का आर्थिक परिस्थिति कारक प्रत्येक चुनाव को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है।

8.तात्कालिक परिवेश:

तात्कालिक परिवेश किसी भी चुनाव में मतदान व्यवहार का महत्वपूर्ण कारक होता है। यह परिवेश राष्ट्रीय व स्थानीय मुद्दों तथा घटनाओं से जुड़ा हो सकता है। इसके सामाजिक व आर्थिक आयाम होते हैं। भ्रष्टाचार, महंगाई, अपराध, कानून व व्यवस्था इत्यादि तात्कालिक परिवेश मतदान व्यवहार को अवश्य प्रभावित करते हैं। चुनाव के समय की महत्वपूर्ण घटनाएं व मुद्दे जो जनता से सीधे तौर पर जुड़ी हों मतदान पर अवश्य ही प्रभाव डालती हैं। प्रादेशिक चुनावों में स्थानीय घटनाओं व मुद्दों का अधिक प्रभाव रहता है। परंतु कभी-कभी राष्ट्रीय मुद्दे भी प्रादेशिक चुनावों पर प्रभाव डालते हैं। ये तात्कालिक परिवेश, घटनाक्रम व मुद्दे किसी राजनीतिक दल या प्रत्याशी को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार से प्रभावित करते हैं। ये सभी घटनाक्रम व मुद्दे मतदाता को किसी एक राजनीतिक दल या प्रत्याशी के पक्ष या विपक्ष में मतदान हेतु प्रेरित करते हैं। भारत में मतदान व्यवहार पर राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय दोनों घटनाक्रमों व मुद्दों का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

निष्कर्ष:

मतदान व्यवहार के विभिन्न कारक होते हैं जिनका अध्ययन वर्गीकरण के माध्यम से ही किया जा सकता है। परंतु इस वर्गीकरण की अपनी सीमा है क्योंकि इसमें सभी कारकों का समावेश संभव नहीं है। मतदाताओं का एक ऐसा समूह अवश्य होता है जो वर्गीकृत कारकों से इतर अन्य कारकों के आधार पर भी मतदान करता है। इनमें मतदाताओं की व्यक्तिगत पसंद, सत्ता विरोधी रुझान,नोटा इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है। ये कारक किसी भी चुनाव में अपनी भूमिका का निर्वहन करते हैं।

लोकतंत्र का आधार और भविष्य स्वतंत्र, निष्पक्ष चुनाव व सकारात्मक मतदान व्यवहार पर निर्भर है। भारत में चुनाव व मतदान व्यवहार एक जटिल मुद्दा है जिस पर राष्ट्रीय सहमति की अपेक्षा है। देश में लोकसभा व विभिन्न राज्यों के विधानसभा चुनावों में मतदान व्यवहार के कुछ नकारात्मक पक्ष हैं। मतदान व्यवहार के इन नकारात्मक पक्षों में जाति, धर्म व संप्रदाय, क्षेत्रवाद इत्यादि को सम्मिलित किया जा सकता है। एक स्वस्थ, समृद्ध व शक्तिशाली लोकतंत्र की स्थापना के लिए मतदान व्यवहार के इन नकारात्मक पक्षों को हतोत्साहित किए जाने की आवश्यकता है। इस हेतु आवश्यक है कि मतदान व्यवहार के सकारात्मक पक्षों के प्रति मतदाताओं में जागरूकता पैदा की जाए। एक जागरूक मतदाता मतदान व्यवहार के कारकों में व्यापक राष्ट्रीय हितों व सुशासन से जुड़े मुद्दों को सम्मिलित करता है और उसी आधार पर मतदान करता है। ऐसे जागरूक मतदाता मतदान व्यवहार के संकीर्ण कारकों से प्रेरित होकर मतदान नहीं करते, बल्कि व्यापक राष्ट्रीय हितों से जुड़े व्यापक कारकों से प्रेरित होकर मतदान करते हैं। एक स्वस्थ और शक्तिशाली लोकतंत्र के लिए चुनाव और मतदान व्यवहार भी स्वस्थ और सकारात्मक होनें चाहिए। देश का आम जनमानस तथा राजनीतिक वर्ग अपने नैतिक आत्मबल व इच्छाशक्ति के बलबूते ऐसा कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गेना सी.बी. 'तुलनात्मक राजनीति और राजनीतिक संस्थाएं' विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. नई दिल्ली 1986
2. दुबे अभय कुमार (संपादक) 'लोकतंत्र के साथ अध्याय' वाणी प्रकाशन नई दिल्ली 2002
3. वर्मा एस. एल. 'उच्चतर आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत' नेशनल पब्लिशिंग हाउस जयपुर 2002
4. शर्मा जी. एल. ' सामाजिक मुद्दे' रावत पब्लिकेशन जयपुर 2015
5. सईद एस. एम. 'भारतीय राजनीतिक व्यवस्था' भारत बुक सेंटर लखनऊ 2015
6. जैन धर्मचंद, 'भारतीय लोकतंत्र' प्रिंसवेल पब्लिशर्स जयपुर 2000
7. कोठारी रजनी 'भारत में राजनीति कल और आज' वाणी प्रकाशन चौथा संस्करण नई दिल्ली 2020